सतत विकास के नये आयाम
कड़ी–3 (सुक्ष्म–निव का आधार)

डा. आए. एस. यादव

शीर्षक गीत

≠

श्रोताओ! इस कड़ी में आप सुनेंगे, टिकाऊ विकास और औद्योगिक क्रान्ति की कहानी। औद्योगिक क्रान्ति के शुरूआत का आगाज़ 18वीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था। वर्तमान में औद्योगिक विकास और परिस्थितियों ने हमें कहाँ ला खड़ा किया है, ये कुछ बिन्दू होंगे, जिनपर आज रोशनी डाली जायेगी। बढ़ती आबादी के दबाब ने मांग को नई उँचाइया दी, परिणाम पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव।

इस कड़ी में चर्चा की जायेगी की टिकाऊ विकास और औद्योगिकरण का समावेश किस प्रकार सम्भव हो सकता है। इसके लिए नई सोच और नवाचार की जरूरत है। इसके साथ–साथ कुछ नए और महत्वपूर्ण अन्य पहलूओं पर भी जानकारी दी जायेगी।

≠ शीर्षक गीत ≠

कलाकारः – 1 चन्द्र (13–15 वर्ष) स्कूल का विद्यार्थी

2 देवी (10–12 वर्ष) चन्द्र की छोट्टी बहन

3 पुष्पेन्द्र (40–50 वर्ष) चन्द्र एवं देवी का पिता

4 दादी (70 वर्ष) चन्द्र की दादी

5 जेम्स वाट्स (यूरोपियन लहजे में वृद्ध आवाज)

6 वाचन स्वर (उदघोषक)/ श्रीमती रश्मि

दृश्यः फैक्ट्री गेट के बाहर नारों की आवाज़/ मजदूरों के शोर और चिल्लाने की आवाज़

''नहीं चलेगी, नहीं चलेगी– तानाशाही नहीं चलेगी''

''हमारी मांगें पूरी करो''

''मजदूर एकता, जिन्दाबाद''

दादीः (कमरे के अन्दर से ): अरे! ऐ क्या शोर हो रहा है?

चन्द्रः देखना, बाहर ये सब क्या चल रहा है?

चन्द्रः (हँसते हुए) दादी जी, कुछ नहीं है। ये तो सब टेलिविजन पर चल रहा है।

दादीः ओह! ये सब है क्या? मैं तो डर ही गई थी।

पापाः चन्द्र..... ओ चन्द्र। सुन रहे हो। TV की ध्वनि कुछ कम करलो। तुम्हारी दादी जी को अच्छा नहीं लग रहा।

चन्द्रः अच्छा पापा (TV की ध्वनि धिरे–धिरे कम होते हुए) परन्तु पापा। आखिर ये सब हो क्या रहा है?
मजदूरो की ये भिड़, इतना उग्र क्यो हो रही है?

पापाः बेटा ये... फैक्ट्री के मजदूरों ने हड़ताल की हुई है।

चन्द्रः हड़ताल ! पर क्यों?

देवीः हाँ मुझे मालुम है। आजकल यह शब्द खुब सुनाई देता है।

चन्द्रः (खिजते हुए) हर बात में अपनी टांग अड़ाती रहती है।

पापाः चन्द्र ये ठीक नही है। ऐसा नहीं कहते है। वो तुम्हारी छोटी बहन है। तुम्हे ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।

चन्द्रः सौरी पापा। परन्तु ये लोग हड़ताल क्यों कर रहे है?

देवीः हाँ पापा ! बताइये ना।

पापाः O.K. अच्छा– मैं आप लोगो को बतात हूँ।

ये कामगार– हड़ताल पर है, यानि फैक्ट्री में उत्पादन से सम्बन्धित काम इन्हें नही करना।

देवीः परन्तु पापा! ये काम क्यों नहीं करना चाहते?

पापाः उनकी कुछ माँगें होंगी, जो फैक्टी के प्रबन्धकों से पूरी करवाना चाहते है। जब तक उनकी माँगे पूरी नहीं होंगी, वे काम नहीं करेंगे।

चन्द्रः आखिर ऐसी क्या माँगे है?

पापाः सामान्यताः मजदूरों की एक ही माँग होती है और वो है– उनकी पगार को बढ़ाना।

देवीः इसमें आखिर क्या बुराई है? फैक्ट्री मालिको को जरूर उनकी तनख्वा बढ़ानी चाहिये।

पापाः देवी बेटी! ये मशला इतना आसान नहीं है। बहुत ही पेचिदा होता है। इसमें आर्थिक और सामाजिक दोना पहलु जुड़े हुए है।

चन्द्रः पापा– हम कुछ समझे नहीं। रूपयों की किसको आवश्यकता नहीं होती है।

पापाः अच्छा–भई–अच्छा, मैं समझाता हूँ। आखिर मालिक औद्योगिक इकाई क्यों लगाता है?

चन्द्रः व्यापार करने और पैसा कमाने के लिए।

पापाः बिल्कुल सही कहा। और व्यापार लाभ कमाने और धन कमाने के लिए किया जाता है।

चन्द्रः सही पापा।

पापाः इसलिए फैक्ट्री के मालिक ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाना चाहते है। इसके लिए उत्पादन बढ़ाते हैं और कभी–कभी मजदूरों का शोषण भी शुरू कर देते है।

चन्द्रः शोषण! वो कैसे?

पापाः हाँ। ऐसा होता है। थोड़ी पगाार में अधिक काम। या फिर कम छुट्टियाँ और काम के अधिक घन्टे। ये सभी अन्याय होता है।

चन्द्रः हाँ.....

पापाः ये सब होने पर– श्रमिक अपनी यूनियन बनाते है और मालिको का विरोध करते हुए अपनी माँगे उनके सामने रखते है। आखिर वो भी मानव है। उनको भी अपना घर खर्च चलाना होता है।
परिवार की देखभाल करनी होती है।

देवीः हाँ पापा – आप सही कहते है।

पापाः कभी–कभी यूनियन के पदाधिकारी–मजदूरों को बरगलाते भी है और हड़ताल पर जाने के लिए बाध्य करते है।

चन्द्रः वो कैसे पापा

पापाः कभी–कभी मजदुरों की माँगे अव्यवहारिक और गलत होती है।

देवीः पापा.... मैं कुछ समझी नहीं।

पापाः हाँ, यह एक तरह से सामाजिक पहलुओं से जुड़ा मुद्दा है।

चन्द्रः इस तरह तो इसका कोई अन्त नहीं। हर एक इस प्रकार हड़ताल करेगा तो फैक्टी बन्द हो जायेगी।

पापाः (हँसते हुए) नहीं बेटे। हमारे यहाँ अनेको औद्योगिक इकाइयाँ है जो भलि–भाँति चल रही है।

देवीः परन्तु पापा, जब ये सारी फैक्ट्रियाँ नहीं थी, तब भी तो काम चलता होगा।

पापाः हाँ.... चलता था। क्या आप ये सब जानना चाहते हो?

देवीः हाँ पापा बताइये ना...

पापाः उसके लिए तो हमे पिछे जाना होगा।

देवीः पापा–ये पिछे क्यों जाना है?

पापाः हाँ बेटी, 18वीं शदी में। जेम्स वाट्स स्कॉटलेण्ड के रहने वाले थे। 1763 ई. में उनका Newcomen द्वारा बनाये गये भाप इंजिन में सुधार करने के लिए कहा गया। जेम्स वाट्स एक अच्छे तकनीशीयन थे। उन्होंने उस भाप–इंजिन में क्रमवार अनेंको सुधार किए। उनके द्वारा किए गये सुधारों से, भाप के उस इंजिन को मशिनों के चलाने के लिए काम में लिया जाने लगा।

दृश्यः पिछे से आती हुई ध्वनि जो एक वृद्ध यूरोपिन की लग रहा है।

≠ ≠ ≠

जेम्स वाट्सः मुझे आज भी वो दिन याद है। वो वर्ष 1700 ई. का था। उस समय मेरी उमर–यही कोई 12 वर्ष की रही होगी। मैं स्कूल में पढ़ने के लिए जाता था। मेरी चाची रसोई–घर में कुछ बना रही थी। चाय की केतली में पानी उबल रहा था। यह उबाल इतना तेज था कि केतली के ढ़कन को उपर की ओर फैंक रहा था।

≠ ध्वनि प्रभाव ≠

मैं केतली की ओर लगातार देख रहा था। मैंने ढ़कन को रोकने का प्रयास भी किया। जब मैंने ढ़कन को रोक रखा था, भाप साईड से निकलने लगी। और जैसे ही मैंने हाथ उठाया तो केतली का ढ़कन दूर जा गिरा। भाप की उस अथाह शक्ति को, बच्चपन में ही, मैंने जान लिया था। आगे चलकर इसी शक्ति को मेंने मशिनों को चलाने के लिए काम में लेना शुरू किया।

≠ ध्वनि परिवर्तन ≠

पापाः इस प्रकार उस महान तकनीशियन ने शक्तिशाली भाप के इंजिन का आविष्कार किया। समय–समय पर किए गये सुधारों से इस इंजिन को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सका।

चन्द्रः क्या अविष्कार था?

देवीः पापा, उस समय तो उस आविष्कार ने सभी को आश्चर्य में डाल दिया होगा।

पापाः जैसे–जैसे इस इंजिन को प्रभावशाली बनाते चले गये, तो पूरे इंग्लेण्ड का ही स्वरूप बदलते चला गया। और यह सब कुछ सम्भव कर दिखाया था जेम्स वाट्स ने। यह औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत थी।

उस दौरान किये गये अभिनव प्रयोगों ने 18वीं सदी के मध्य तक, औद्योगिक क्रान्ति को सम्पूर्ण यूरोप में फैला दिया।

देवीः क्रान्ति.... वो भी औद्योगिक!

पापाः ये उसी प्रकार की रही होगी जैसा आजकल सूचना क्रान्ति के श्रेत्र में हो रहा है।

चन्द्रः पापा! क्या उससे पहले फैक्टियाँ नही थी?

पापाः ज्यादातर जो उत्पाद आज हम अपने दैनिक जीवन में काम में लाते है उनके उत्पादन वृहद्ध स्तर पर होता है। इसके लिए उर्जा संचालित बड़ी बड़ी मशिनों का प्रयोग होता है। मानव द्वारा संचालित इन मशिनों में आजकल रोबॉट भी काम करते नज़र आजायेंगे। पहले के युगों में इस प्रकार की मशिने नहीं होती थी। औद्योगिक क्रान्ति से पहले, घरों में ही आवश्यक वस्तुओं का निर्माण होता था। इसमें हाथ के ओज़ारों का इस्तेमाल होता था। छोटा सा काम करने के लिए भी कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती थी। मानव की और पशुओं के श्रम से ये सारी उर्जा मिलती थी।

औद्योगिक क्रान्ति ने इस सम्पूर्ण परिदृश्य को ही बदलकर रख दिया, उस दौर में।

दृश्यः– कमरे से वृद्ध व्यक्ति की हलचल ≠

≠ संगीत ध्वनि ≠

दादीः अरे पुष्पेन्द्र, मैं तुम्हारी सारी बाते सुन रही थी। तुमतो बहुत पहले की बात कर रहे थे।

चन्द्रः अब आयेगा मजा। दादी जो आ गई।

देवीः दादी जी, इधर बैठो। इस आराम कुर्सी पर

दादीः (बैठते हुए) .... हाँ... तो मैं कह रही थी...

चन्द्रः (हँसते हुए) दादी भूल गई...

पापाः हाँ माँ... आप सूत कातने की बाते बता रही थी।

चन्द्रः परन्तु पापा..... ना ही किसी ने इंग्लेण्ड में और ना ही भारत में उस समय किसी ने इस परिवर्तन का विरोध किया।

पापाः चन्द्र.... कभी– कभी तुम बड़े अच्छे प्रश्न कर लेते हो। जानते हो उस समय भी इसका विरोध हुआ था और वे लोग थे– छोटी–छोटी दकियानुसी निकालने वाले। न जिनके पास काम था और ना ही दिमाग।

देवीः पापा– मैं समझी नहीं। वो विरोध क्यों कर रहे थे?

पापाः वो लोग थे Luddites. वे सदैव तकनीकी अपनाये जाने और विज्ञान की खोज़ो के विरूद्ध थे। उस समय में भी इस प्रकार के लोगों ने फैक्ट्रियों में तोड़–फोड़ की और मशिनों पर काम करने वाले कामगारो से मारपीट की थी। उनका नेता था नेड–लूड

देवीः (हँसते हुए) बहुत ही मजेदार कहानी

दादीः तुम इतना पिछे क्यों जाते हो। मेरे देखते–देखते ही धरती–आसमान का अन्तर आ गया।

पापाः हाँ मम्मी। औद्योगिकीकरण का सबसे बड़ा बदलाव आया कपड़ा उद्योग मे। सर रिचर्ड आर्कराइट द्वारा तकिया कातने की मशीन के आविष्कार ने सम्पूर्ण परिदृश्य को ही बदल डाला। औद्योगिकरण ने हमारी राह साधारण मशिनों से जटिल मशिनों की ओर– एवं आगे चलकर mass production की तरफ मोड़ दी।

≠ ध्वनि प्रभाव – फैक्टी मशिनों का ≠

चन्द्रः औद्योगिकरण ने पूरे विश्व को बदलकर रख दिया है। पापा क्या ये सही है।

पापाः हाँ चन्द्र। औद्योगिक क्रान्ति ने इतिहास और मानव सभ्यता के स्वरूप को ही बदल कर रख दिया। जीवन का हर पहलू किसी न किसी स्वरूप में इससे प्रभावित हुआ है। औद्योगिक इकाइयों से उत्पादन बढ़ा है और हमारे जीवन स्तर में सुधार हुआ है। विशेषकर मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के लोगों का।

चन्द्रः ओह! क्या बात है? हम भी तो पापा इन्ही वर्गो में आते है।

पापाः परन्तु इसका दूसरा पहलू भी है।

चन्द्रः आपका क्या अभिप्राय है, पापा।

पापाः गरीब और मध्यम स्तर वाले लोगों का जीवन सदैव चैलेंज भरा होता है। फैक्ट्रियों में काम करने वाले कामगारों की पगार एक तो कम होती है, दूसरा उनका काम नीरश होता है। अकुशल और अप्रशिक्षित लोगों की नौकरी अस्थाई होती है और कभी भी निकाले जाने का डर सताये रहता है। कुशल कामगारों की मांगे, मशिनीकरण के कारण घटती है।

दादीः हाँ, मैं कई कुशल कामगारों और बुनकरों को जानती हूँ, जिनका रोजगार छिन गया था। अपना जीवन– यापन करने के लिए उनको दूसरे छोटे–मोटे धन्दे करने पड़ रहे है।

पापाः दूसरा आबादी के बढ़ते दबाब के कारण, औद्योगिक क्षेत्रों में मूल–भुत, सुविधाओं की कमी होती जा रही है। अत्यधिक भिड़–भाड़, रहने के लिए मकानों की कमी, स्वच्छता का अभाव और बढ़ता प्रदूषण सामान्य समस्यायें हैं।

देवीः अरे इतनी सारी समस्यायें। जेम्स वाट्स और उनके साथियों को अपने आविष्कार करने से पहले दस बार सोचना चाहिये था। (हँसते हुए)

पापाः (हँसते हुए) इसमें जेम्स वाट्स की कोई गलती नहीं है। औद्योगिक क्रान्ति और औद्योगिक ईकाइयाँ दोनो ही जरूरी था।

देवीः परन्तु क्यों?

पापाः बढ़ते आबादी के दबाब को सहारा देने के लिए।

चन्द्रः जसंख्या का दबाब

पापाः हाँ। आबादी के बढ़ते दबाब के कारण वस्तुओं की माँग भी बढ़ती गई।

चन्द्रः अब समझा यह बढ़ती माँग पूरी की जा सकती है, अधिक उत्पादन करके।

पापाः तुमने सही समझा। हाथों से उत्पाद की गई वस्तुओं से इस माँग को पूरा करना असम्भव था। इसलिए मशिनीकरण और ऑटोमेशन जरूरी था।

दादीः मैं तो पुष्पेन्द्र ठीक है परन्तु कुशल कारिगारों द्वारा हाथ से तैयार वस्तुओं का मुकाबला, मशिनों द्वारा तैयार सामग्री कभी नहीं कर सकती है।

पापाः (हँसते हुए) बिल्कुल ठीक कहाँ माँ।

देवीः पापा ये क्या?

पापाः बेटी क्या अभिप्राय है तुम्हारा?

देवीः आप दोनो तरफ की बातें कह रहे है। पहले आपने कहा था उद्योग जरूरी है और अब दादी की हाँ में हाँ।

पापाः बेटा, यही तो समझने की बात है। सन्तुलन का होना जरूरी है। बढ़ती आबादी के कारण, माँग बढ़ी है। आज हम संसाधनों के भोगी और उनपर निर्भर होते जा रहे हैं। हर बार हमें कुछ नया चाहिये। परिणाम असीमित औद्योगिक उत्पादन, जिसके कारण पिछले कुछ दसको से नई समस्यायें सामने आ रही है।

देवीः कौन सी गम्भिर समस्यायें हैं, पापा।

पापाः बढ़ते औद्योगिकरण के कारण, दो मुख्य समस्यायें मुँह बाहें खड़ी है। एक है पर्यावरण प्रदूषण और दूसरी है अत्यधिक प्राकृतिक संसाधनों का दोहन।

देवीः पापा किस गम्भिर समस्या की बात कर रहे है?

पापाः बेटी, उद्योगिकरण के कारण मुख्य समस्यायें हमारे सामने मुँह बांहे खड़ी है। जानना चाहोगी।

देवीः हाँ पापा, बताइये ना!

पापाः एक है बढ़ता प्रदूषण है और दूसरी बड़ी समस्या है, प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक दोहन।

दादीः सही कहा। आधुनिक विकास ने हमें लकड़ी के चुल्हे से गैस सिलिण्डर दे दिया है। इससे घरों में प्रदूषण कम हुआ है। परन्तु देखिये, घरों के बाहर जब हम जाते है तो चारों ओर फैक्ट्रियों से निकलने वाला प्रदूषण।

पापाः हाँ, माँ, ये तो और भी ज्यादा हानिकारक है। जैवाश्म ईंधन ने शहरों का प्रदूषण बढ़ा दिया है।

दादीः ये तो ठीक है। परन्तु आज की नई पीढ़िया तो इसे दूसरे रूप में देखती है। उनके लिए नई सुख–सुविधायें आज जो उपल्बध है। खैर– भगवान उनको सद्‌बुद्धि दे।

पापाः (हँसते है) माँ, अब तो भगवान भी नहीं बचा सकता, चारों ओर प्रदूषण ही प्रदूषण।

चन्द्रः पापा, वायू प्रदूषण, जल प्रदूषण और मिट्टी प्रदूषण ये तो सब मैंने पढ़ा है। पर पेट के प्रदूषण का भी पहले इलाज़ हो। मुझे तो जोर की भूख लगी है।

≠ सभी हँसते है ≠

देवीः चन्द्र पहली बार तुमने कोई अच्छी बात कही है (हँसती है)

चन्द्रः दीदी मैं तो सदैव काम की ही बात करता हूँ। परन्तु मेरी कोई सुनता कौन है?

देवी ऑर्डर ऑर्डर! नास्ते के लिए तैयारी शुरू की जाए। ये मेरी दादी का हूकम है। और हाँ, ध्यान रहे आगे की कार्यवाही बाहर गार्डन में शुरू होगी।

दृश्य परिवर्तनः रसोई घर के ध्वनि प्रभाव/ कुर्सी–टेबल की आवाज़– दरवाजा खुलने की ध्वनि/ चिड़ियों और पक्षियों का शोर।

≠ ≠ ≠

चन्द्रः देखो। वहाँ अन्दर हम ध्वनि प्रदूषण की बात कर रहे थे और यहा गार्डन में तो इन्होंने सारे रिकार्ड तोड़ दिए।

दादीः चन्द्र, ये कोई ध्वनि प्रदूषण थोड़ी है। जरा ध्यान से सुनो, कितना मधुर संगीत और लय–बद्ध पक्षियों का संगीत है।

पापाः (हँसते हुए) भाग्यशालियों को मिलता है–ये संगीत सुनने को।

देवीः (हँसते हुए) तो विचारों के आदान–प्रदान सम्बन्धि कोर्ट की आगे की कार्यवाही शुरू हो।

चन्द्रः पापा, आप विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की बात कर रहे थे।

पापाः प्रदूषण के अलावा भी औद्योगिकीकरण के कई प्रभाव पड़े है। नये भवनों के निर्माण, सड़क तथ रेल यातायात की बढ़ती सुविधाओं ने खेती योग्य भूमि का स्वरूप ही बदल दिया। कृषि जोत की भूमि कम हो रही है जिससे उपज प्रभावित होना स्वाभाविक है।

चन्द्रः क्या ये सही है?

पापाः इसके साथ कई सामाज़िक पहलू आ जूड़े है। फैक्टी लगाने में धन और संसाधनों की जरूरत पड़ती है। सफल उधमी अथाह धन कमाते है। इस धन से वो बड़ी–बड़ी नई ईकाइयाँ स्थापित करते है। परिणाम प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का कूचक्र।

दादीः इसी कूचक्र ने धनवानों को और धनी और गरिबों को गरीब बना कर रख दिया।

पापाः हाँ माँ।

देवीः पापा, आप तो समस्याओं की बात कर रहे थे। क्या उनका भी कोई समाधान है?

≠ ध्वनि प्रभाव कप–प्लेट/दरवाज़ा/पैरो की पदचाप ≠

एश्मि समाधान पेश है। लिजिये हाजिर है चाय/ काफी और नाश्ता।

चन्द्राः वाउ! मम्मी के हाथ के स्नेक और.... और....

पापाः (हँसते हुए) हर समस्या का समाधान मौजूद है। बस जरूरत है सोचने के नज़रिये को बदलने की।

रश्मिः पहले नाश्ता और फिर नज़रिया (हँसते हुए)।

देवीः आप किस नज़रिये की बात कर रहे है? बताइये ना.....

पापाः हर जगह आवश्यकता है नमोन्वेष की, चाहे उत्पाद हो या खपत।

चन्द्रः इसका मतलब हुआ की हमें सौर उर्जा को अपनाना होगा।

पापाः बिल्कुल सही। एक ही रास्ता बचा है। इससे बढ़ती उर्जा की मांग को पूरा किया जा सकेगा और प्रदूषण भी कम होगा।

दादीः बिजली की कटोती से भी बचा जा सकेगा।

पापाः सही। इससे जिवाश्म ईंधन की खपत कम होगी। परिणाम प्रदूषण से सुरक्षा। आज हम जिवाश्म ईंधन को सम्पदा के रूपमें देखते है, जबकी ये अमूल्य है। क्योंकि इन्हें हम कृत्रिम रूप में नहीं बना सकते है। आज आवश्यकता है स्मार्ट तकनीकी के प्रयोग की। इससे प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है और उत्पादन को भी बढ़ाया जा सकता है।

चन्द्रः पापा, हमारे अध्यापक ने हमें ग्रीन हाडस गैसों और कार्बन फूट–प्रिन्ट के बारे में भी बताया था।

पापाः हाँ चन्द्र, हमें कार्बन के उत्सर्जन को कम करना होगा। भारत सहित सभी देश इसके उत्सर्जन को कम करने में लगे हुए है। इसके लिए नई तकनीकी के उपयोग को प्रोत्साहन देना होगा। इससे पर्यावरण की समस्या से निपटा जा सकेगा। परन्तु सामाजिक पहलुों पर हमें अलग नज़रिये से देखना होगा।

देवीः कोन सी तकनीक जरूरी होगी इसके लिए?

पापाः देवी बेटी, क्या तुमने सिलेज के बारे में सुना है?

चन्द्रः सि.... ले..... ज ... ये क्या है?

पापाः अच्छा मैं समझाता हूँ तुम्हें। सिलेज का अभिप्राय है– 'एक शहर गाव में'

(एक साथ) ... आश्चर्य से... CITY IN A VILLAGE

पापाः ये एक विचार ही नही है। जाने माने परमाणु वैज्ञानिक डा. अनिल काकोडकर ने यह नया विचार रखा है। इसके अनुसार– मूल–भूत सभी आवश्यकतायें गाँव में उपलब्ध करवानी है या कई गाँव मिलकर स्वावलम्बन रूपि गाँवों का समुह बना ले। जहाँ सभी आवश्यकताये पूरी हो सके।

दादीः कितनी बड़ी बात कही है। बापू ने भी हमें यही का था वो कहते थे– ''चलो गाँव की ओर''। गाँवों में मूलभूत सारे साधन उपलब्ध करवाने चाहिए।

पापाः हज़ारो उद्यमियों के ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जो गाँवो से थे, जिन्होंने अपने बल–बूते हजारों रोज़गार पैदा किए। मेरे मोबाईल फोन में एक छोटी डाक्यूमेंन्टी फिल्म है। क्या आप सभी देखना चाहोगे?

देवी और चन्द्रः (एक साथ) हाँ पापा, please दिखाइये ना।

पापाः अच्छा! मैं तुम्हे दिखाता हूँ।

(दृश्यः– मोबाइल फोल चालू करने का ध्वनि प्रभाव)

वाचकः ये कहानी है उस शक्स की, जिसका परिवार रोजी–रोटी के लिए संघर्ष कर रहा था। मैं बात कर रही हूँ– मनशुख भाई प्रजापती की। मनशुख भाई का परिवार शुरू में सामान्य मिट्टी के बतर्न बनाता था। उसने अपने कौशल और लगन से, रसोईघर में काम आने वाले बर्तनों की नई श्रृखला तैयार कर दी। इसमें पानी को छानने एवं साफ करने का फिल्टर, मिट्टी का फ्रिज, हॉट प्लेट, कूकर, नॉन स्टिक तवॉ और अनेकों बर्तन जो दैनिक जीवन में काम आते है।

दादीः अरे वाह! क्या बात है?

वाचकः उसके पास शुरू में पैसा नहीं था। उसने ये सब एक औद्योगिक की इकाई में काम करते हुए सब–कुछ सिखा। उसने 30,000 रूपये ब्याज पर उधार लिए। मनसुख भाई मेहनती और नवोन्वेषी विचारों का था। उसने मिट्टी से बने बर्तनों की नई श्रृंखला बाजार में उतारी।

उसने नए–नए प्रयोग किए। आकर्षक मॉडल के बर्तन बाजार में उतारे और उनके पैटेन्ट लिए। आज वो, अनेक देशों में अपने उत्पाद निर्यात करता है।

≠ संगीत प्रभाव ≠

चन्द्रः पापा, मनसुख भाई तो कमाल के आदमी है।

पापाः चन्द्र ऐसे अनेको उदाहरण, तुम्हें मिल जायेंगे। इसी प्रकार बुनकरों का एक गाव है शारजीपॅट जो आन्ध्रप्रदेश के नॉलगोण्डा जिले में पड़ता है। वहाँ के रहने वाले चिन्ता किन्डी मल्लेशम ने तो हथ करघे उद्योग में क्रान्ति ला दी है। पौचॉमपल्ली ने रेशमी साड़ी के बनाने की विधि का यान्त्रिकी नविनीकरण कर ढ़ाला। पहले इस साड़ी को हाथो से बनाना पड़ता था। एक साड़ी को बनाने के लिए नौ हज़ार बार हाथो को इधर उधर घूमाना पड़ता था। परिणाम हाथों के जोड़ो की समस्या

देवीः फिर तो बहुत अच्छा हुआ, इसमें बदलाव करके।

पापाः चिन्ता किन्डी ने मशिन में बदलाव करके इस समस्या का निदान कर ढ़ाला। परिणाम, अच्छी साड़िया और पिड़ादायक श्रम से मुक्ति।

दादीः ये ही तो समाज के वास्तिविक हीरों हैं।

पापाः हाँ, माँ आपने ठीक कहा

देवीः ये नवाचार किसी चमत्कार से कम नहीं।

पापाः इसी प्रकार का चमत्कार कर दिखाया है, तामिलनाडू में मदूराई के रहने वाले एम. नागराजन ने। उसने एक मशिन बनाई है, जो एक घन्टे में 200 किलोग्राम लहसून को छील देती है।

दादीः ये तो कमाल है। लहसून को छिलना बहुत बड़ा काम होता है।

पापाः सबसे सुन्दर बात–लहसून की कलियाँ टूटती भी नहीं और कटती भी नही है।

दादीः क्या कमाल की मशीन है?

पापाः एम. नागराजन ने निम्बू काटने की मशीन भी बनाई है। एक मिनट में यह मशीन 160 निम्बूओं को काट देती है। यही नागराजन अपने पाँच आदमियों की टीम के साथ आज इन मशीनों को तैयार करके बजरा में उपलब्ध करवा रहे है।

देवीः पापा, क्या आपके मोबॉइल फोन में इन मशीनों की फिल्में हैं।

पापाः हाँ, मैं अभी दिखता हूँ।

≠ ध्वनि प्रभाव ≠

देवीः पापा ये तो अद्‌भुत मशीनें हैं।

चन्द्रः मेरे को तो पता ही नहीं था कि हमारे गाँवों में भी इतना अच्छा काम करने वाले हैं।

देवीः हँसती हुई .... गूदड़ी के लाल

पापाः हमारे गाँवों में प्रतिभावों की कमी नहीं है। जरूरत है उनको प्रोत्साहन देनें की और पहचान दिलाने की। महात्मा गाँधी के मूल सिद्धान्त की ओर हमें लौटना होगा, तभी हम टिकाऊ और सतत विकास की बात कर सकते है।

देवीः पापा, गाँधी जी का वो सिद्धान्त क्या था?

पापाः गाँधी जी कहते थे–

ऐसा करके हम औद्योगिकरण से उपजी समाजिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

दादीः इसमें हमें बड़े उद्योगो की जरूरत नहीं है। इससे हमारी प्रकृति बचेगी, खेत–खलिन बचेंगे, शहर और गाँव बचेंगे

चन्द्र और देवीः और साथ में बचेगी उर्जा और राष्ट्रीय सम्पदा

पापाः सही समझे (हँसते हुए) इसीलिए कहा जाता है, एक लम्बी यात्रा– पहले कदम से शुरू होती है।

(सभी हँसते है।)

≠ समापन्न संगीत ≠

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्नः– 1. भाप के ईंजन का आविष्कार किसने किया था?

उत्तरः– जेम्स वाट्‌स जो की स्कोटलेण्ड के रहने वाले थे।

प्रश्न :– 2. सिलज से क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– गाँवों की मूल भूत आवश्यकतायें गाँवों में ही उपलब्ध करवाना

----------**********----------